**एक एक लिए आलिंघण, एक एक दिए चुमण।**
**बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली।। ३ ।।**

बारी-बारी से वालाजी से चिपटती हैं। चुम्बन देती हैं और गले में हाथ डालकर अपनी कामना पूर्ण करती हैं।

**जीवन मन विमासियूं, सखी केम भाजसे खेवना।**
**आ तां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्यां हलीमली।। ४ ।।**

वालाजी ने मन में विचार किया कि सखियों की चाह कैसे पूरी करूं? सखियां तो सागर के प्रवाह के समान मिल-जुलकर चली आ रही हैं।

**पछे एक वालो एक सुन्दरी, एम रमूं रंगें रस भरी।**
**लिए आलिंघण फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली।। ५ ।।**

इसलिए वालाजी ने इतने रूप बनाए कि एक-एक गोपी और एक-एक वालाजी बनकर आनन्द में रास खेलने लगे और बार-बार चिपटा-चिपटाकर अंग की तड़प पूरी करने लगे।

**विनोद हाँस अतिघणो, वाले वधारियो सुखतणो।**
**कामनी प्रते कंथ आपणो, एणे सुखे दुख नाख्यां दली।। ६ ।।**

बहुत सुख की हंसी का आनन्द वालाजी ने बढ़ा दिया। वालाजी ने ऐसा सुख देकर सखियों का दुःख मिटा दिया।

**अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खूंचता।**
**स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सवली।। ७ ।।**

वालाजी को अधरों का रस पीते समय सखियों के स्तन चुभते हैं। सखियां इस प्रकार वालाजी से सुख लेती हैं। यह लीला अति प्रबल है।

**साथ मांहें इंद्रावती, वालातणे मन भावती।**
**रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली।। ८ ।।**

सखियों में श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के मन को भाती हैं। वह खेल में अति आनन्द पैदा करती हैं, क्योंकि वह प्रारम्भ से सर्वगुण सम्पन्न हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ७०१ ।।

## राग मलार

**आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया रे।**
**कांई उपनू अंग उलास, सुन्दर सुख लाविया रे।। १ ।।**

वालाजी दुबारा आ गए हैं, इसलिए हम आनन्द से उनके साथ रास खेलें। उनके आने से दिलों में उमंग बढ़ गई है और वह सुख अधिक ले आए हैं।

**सखी दियो रे मांहों मांहें हाथ, वचे जोड लीजिए रे।**
**स्याम स्यामाजी पाखलवाड, सखियो तणी कीजिए रे।। २ ।।**

सखियो! आपस में हाथ मिलाकर श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी को बीच में ले लो। उनको चारों तरफ से घेरे में ले लो।

Nijanand App

**हवे रामत रमिए एम, खरो ग्रहीजिए रे।**
**आपण एणी पेरे बंधेज, सहु रहीजिए रे।। ३ ।।**

अब इस तरह की रामत खेलें कि हमारे हाथ से वालाजी छूटकर जा न सकें। ऐसे बन्धन हम सब मिलकर बांधें।

**एनूं रुदे अति कठोर, ए थकी विहीजिए रे।**
**हवे ए अलगो एक पल, आपण न पतीजिए रे।। ४ ।।**

इनका हृदय बड़ा ही कठोर है। इनसे डरिए। एक पल के लिए भी अलग होने में इनका विश्वास न करें।

**फरतां रमतां रास, चुमन मुख दीजिए रे।**
**लीजिए रस अधुर, अमृत पीजिए रे।। ५ ।।**

रास खेलते-खेलते चुम्बन भी दीजिए। अधरामृत का रस पीजिए।

**एणे भीडिए अंगों अंग, कुचो वचे आणिए रे।**
**एना विलास अनेक भांत, मोहन वेल माणिए रे।। ६ ।।**

इनको छाती से छाती मिलाकर दो स्तनों के बीच चिपटा कर रखें। इनके विलास के सुख अनेक तरह के हैं। इनको मोहन बेलि मानना।

**मुख मांहें दई अधुर, जीवन सुख जाणिए रे।**
**अदभुत एहेना सनेह, ते केम वखाणिए रे।। ७ ।।**

इनके मुख में अधर देने पर अपने जीवन का सच्चा सुख जानो। इनके अद्‌भुत प्रेम को कैसे बयान करें?

**वाले सांभलियां रे वचन, भरी अंक लीधियो रे।**
**वाले चितडूं दईने चित, सरीखी कीधियो रे।। ८ ।।**

वालाजी ने जब यह वचन सुने तो अपनी कोहली में भर लिया तथा अपने चित्त से चित्त मिलाकर अपने समान कर लिया।

**ऐना मनोरथ अनेक पेर, उपाया अमने घणां रे।**
**सनेह उपाईने आण्यां, सागर सुख तणां रे।। ९ ।।**

वालाजी ने हमारे मनों में अनेक प्रकार से इच्छाएं उत्पन्न कर दी हैं तथा सागर के समान सुख हमको दिए हैं।

**सखी सागरनी सी वात, सुणो सुख स्यामनी।**
**मारी जिभ्या आणे अंग, न केहेवाय भामनी।। १० ।।**

हे सखी! सुनो, सागर के समान सुख की क्या बात है। हम अंगनाओं की इस जुबान (जिह्वा) से उन सुखों का वर्णन नहीं हो सकता।

**वाले चितडूं दईने चित, ताणी लीधां आपणां रे।**
**पछे वनमां कीधां विलास, न रही केहेने मणां रे।। ११ ।।**

वालाजी ने अपना चित्त हमारे चित्त में डालकर अपने पास खींच लिया। बाद में वन में इतना विलास किया कि किसी प्रकार की कमी नहीं रही।

Nijanand App

**कहे इद्रांवती आनंद, वालोजी रंगे गाए छे।**
**हजी रामतडी वृध, वसेके थाय छे रे।। १२ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालाजी बड़े आनन्द में गा रहे हैं और इसलिए यह खेल और भी बढ़ता जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ७१३ ॥

## राग वेराडी चरचरी

**रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री।**
**कान्ह मोहन वेल, सखी कान्ह मोहन वेल री।। १ ।।**

कन्हैया मोहन बेलि के समान रास की रामतें अति प्रसन्नता के साथ करते हैं।

**रासमां विनोद हांस, हांसमा करूं विलास।**
**पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री।। २ ।।**

रास के बीच में विनोद होता है। हंसी होती है। हंसी में विलास करती हूं और अपनी इच्छानुसार रंगरेलियां मनाकर मनोकामना पूरी करती हूं।

**वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी।**
**कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री।। ३ ।।**

वालाजी वन में विलास करके हम से भाग गए थे। उन्होंने ऐसी कठिन हंसी करके बहुत दुःख दिया।

**सखियो करती मान, तेणे विरह ना कीधां पान।**
**विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री।। ४ ।।**

सखियों को जब अभिमान आया तो उनको विरह का रस पान कराया। जिससे उन्हें शरीर की सुध ही भूल गई, ऐसा खेल खिलाया।

**मन तामसियो हरती, मान माननियो करती।**
**अंगे न विरह धरती, तो अम पर थई हेल री।। ५ ।।**

तामसी सखियों ने मन को अपने वश में कर लिया। मानवन्ती (मानिनी) सखियां मान करती थीं। उनके अंगों में विरह का प्यार नहीं था, इसलिए हमको इतना कष्ट (जुदाएगी का) सहन करना पड़ा।

**आतुर करी सर्वे जन, मीठडां बोले वचन।**
**हेतसूं हरतो मन, एवो अलवेल री।। ६ ।।**

वालाजी इतने अलबेले (अलमस्त) हैं कि उन्होंने अपने प्यार भरे वचनों से सबको आतुर कर बड़ा प्यार देकर सखियों के मन को हर लिया है।

**हवे न मूकूं अधखिण, धुतारो छे अतिघण।**
**पल न वालूं पांपण, भूलियो पेहेल री।। ७ ।।**

अब मैं इसे आधे क्षण के लिए भी नहीं छोड़ूंगी। यह बड़ा छलिया है। अब पलक भी नहीं झपकाओ, क्योंकि पहले एक बार भूल कर चुके हैं।

Nijanand App